निबन्ध

ग्राम-पंचायत

भारतमे अदौसँ पंचायतक परिपाटी चलि आबि रहल अछि। ई हमर स्थानीय आदर्श प्रशासनीक व्यवस्थापक स्वयंसेवी उत्तम प्रणाली छल। भारतक इतिहासमे एहनो उदाहरण भेटैत अछि, जखन केंद्रीय आ प्रान्तीय सरकार समाप्त भए गेल; परञ्च गामघरमे पंचायत-प्रणाली सुचारू रूपसँ संचालित होइत रहल। एही उत्कृष्ट प्रणालीक जीवनदायिनी प्राण-धारासँ पोषित भइकँ हमरा लोकनिक जीवन्तता अक्षय बनल रहल। विदेशी विद्वतजन हमर एहि आदर्श पंचायत-प्रणालीक मुक्त कंठसँ प्रशंसा कएने छथि। ग्रामीण सभक समाधान ग्राम पंचायते करैत छल। गाममे रहनिहार लोक नैष्ठिक आ वृद्ध व्यक्तिकँ पंचायतक सदस्यक चुनाव करैत छल। तँ एहिमे पक्षपात आ जाति-पाँतिक प्रश्न नहि उठैत छल। लोक-परलोकक डर छलैक। अत: पंचायतमे दूधक दूध एवं पानिक पानि होइत छलैक। पहिलुक समयमे लोक सेहो सदाचारी स्वभावक होइत छलाह। तँ झगड़ा-झंझटि, मारि-पीट, चोरी-डकैती आ धोखाधड़ीक प्रश्ने नहि रहै। एही दुआरे गाममे सुख-सुविधा छल, शांति छलैक, स्नेह आ सहयोगक भावना रहैक। पंचायत-प्रणालीक एही विशिष्टताक कारण भारतक आत्मा गाममे वास करैत छल। मुसलमान एवं अंग्रेजक शासनकालमे सेहो हमरा लोकनिक ई आदर्श ग्राम-पंचायत-प्रणाली जीवित रहल। स्वतन्त्रतासँ पूर्व धरि ग्रामीण स्तरक झंझट पंचायतमे निपटाओल जाइत छल।

स्वीधीनताक पश्चात् भारतक नव संविधान अस्तित्वमे आएल। ओहूमे आदर्श पंचायतक पुनर्व्यवस्था कएल गेल। प्राचीन भारतमे पंचायत स्वयंसेवी आ गैर-सरकारी संस्था रहए। ओहिमे आइ-काल्हि जकाँ विकास कार्य लेल सरकारी राशिक आवंटन नहि होइत छल। परञ्च स्वतन्त्र भारतक संविधानमे पंचायतक नियंत्रण आ निर्माण सरकारक हाथमे चलि गेल। एहि निमित्त चुनाव आयोगक गठन भेल अओर ओकरे निरीक्षणमे एकर चुनाव सम्पन्न होमए लागल। एहिमे सत्ताक आकर्षण छल आ अधिकारक प्रलोभन। कर्त्तव्यक उपेक्षा रहए। अत: सदाचार बिलाए गेल एवं कदाचार भूषण बनि गेल। पंचायतक कार्यकाल पाँच वर्षक रहल। नीति-निष्ठा निर्वासित भेल। शील दंडित भेलि आ न्याय उपेक्षित। जातिगत दानव ताण्डव नाँच करए लागल। वर्ग-विद्वेषक ज्वालामुखी भड़कि उठल। राजनीतिसँ प्रभावित अओर सरकारसँ संचारित पंचायतक, चुनावमे सेहो विधान सभा आ लोक सभाक चुनावक भाँति रक्तक होली खेलाए जाए लागल। गाँधीक स्वप्नक होलिकादहन भए गेल। दबंग लोक सभ मुखिया बनए लागल आ मोचंड सभ ओकर सदस्य। अनीति केनिहार सभ सरपंचक कुर्सीपर बैसए लागल आ लड़ाकू प्रवृत्तिक व्यक्ति ओकर कार्यकारिणीक रिक्त स्थानपर अधिकार जमाबए लागल। चुनावमे कद-काठी मूल्यवान भए गेल एवं लाठी अपन तागति देखाबए लागल। तलबार हारि-जीतक तराजू बनि गेल आ माला पहिराबए लागल।

एहि प्रकारेँ हम देखैत छी जे जाहि पवित्र उद्देश्यकँ लए ग्राम-पंचायतक स्थापना कएल गेल, से ध्येय पूर नहि भेल। गामघरक अपन समस्या थिकैक। गाम आइयो कृषि-व्यवस्थापर आधृत अछि। जीविकाक मुख्य साधन खेती थिक। परञ्च परिवार बढ़लासँ खेत बँटाएल छैक। जोतक सीमा कमलैए। नोकरीक अभाव छैक। गाममे आइओ

गन्दगीक साम्राज्य व्याप्त अछि। अन्धविश्वास एखनो अपन सत्ता कायम रखने अछि। मारि-पीट, झगड़ा-झाँटी आ खुन-खराबा दिनानुदिन बढ़ि रहल अछि। गाम कलहक अखाड़ा बनल अछि। कमजोर बेदखल भए रहल अछि। ओकर जजाति लूटल जाए रहल अछि। कोर्ट-कचहरीक चक्कर बढ़ि गेल छैक। पंचायत स्थापना एही समस्या सभहिक निपटारा करबा लेल कएल गेल छल। परन्च ओ अपन उद्देश्यमे सफल नहि भए सकल। अपितु जखनसँ पंचायतमे राजनीति घुसिआएल, तखनसँ गामक हालति तँ अओरो बदतर भए गेल। मुखिया आ सरपंच झगड़ा बढ़ाबए लगलाह, सदस्य मोकदमा लड़ाबए लागल।

ग्राम-पंचायतक प्रधान मुखिया आ सरपंच होइत अछि। ग्राम-पंचायत दू भागमे विभक्त होइत अछि-एक कार्यपालिका आ दोसर न्यायपालिका। कार्यपालिकाक प्रमुख मुखिया होइत अछि आ न्यायपालिकाक प्रधान सरपंच होइत अछि। मुखियाक चुनाव पाँच वर्ष लेल कएल जाइत अछि। पंचायत वार्डमे विभक्त रहैत अछि। प्रत्येक वार्डसँ एकटाक सदस्यक चुनाव होइत छैक। मुखिया आ सरपंचक अपन-अपन कार्यकारिणी होइत छैक। मुखिया एवं सरपंचक अनुपस्थितिमे उपमुखिया आ उपसरपंच कार्य सम्हारैत अछि। चुनावक उपरान्त कार्यकारिणीक समस्त सदस्यक शपथ-ग्रहण होइत छैक। शपथ-ग्रहण प्राय: क्यो स्थानीय राजपत्रित अधिकारी करबैत छथि।

कार्यपालिकाक मुख्य उत्तरदायित्व गाममे शिक्षा, सफाई, स्वास्थ्य, पानि, पटवन, सड़क आ खाद-बीजक समस्याकेँ सोझराएब अछि।

न्यायपालिकाक प्रधान सरपंच होइत अछि। ओकर काज ग्रामीण झगड़ाक फरिछौट करब छैक। सरपंचकेँ न्यायिक शक्ति प्रदान कएल गेल छैक। ओ ककरो आर्थिक दंड दए सकैत अछि। गामधर अशाँति उत्पन्न केनिहार अपराधी तत्व, चोर आ डाकू सभकेँ ओ जहलक सजा दिया सकैत अछि।

एहि तरहेँ हम देखैत अछी जे परम पावन उद्देश्यक संग भारतमे प्राचीन पंचायत-प्रणाली पुनर्स्थापना कएल गेल छल। मुदा, ओ अपन उद्देश्यमे पूर्णत: विफल रहल। गामक सार्वजनिक इनार-पोखरि, मैदान आ चारागाह मुखिया-सरपंचक बपौती सम्पति बनि गेल। बाढ़ि, अकालमे बाँटए जाएवला सरकारी राहत सामग्रीसँ गामक उक्त प्रतिनिधि सभक धोइध बढ़ैत गेल। दुनू गोटा नित्य नव-नव षड्यंत्र रचिकेँ जनताकेँ मोकदमामे ओझराबए लागल। तँ जँ हम फेरोसँ गाममे रामराज्य आनए चाहैत छी, तँ एहि दुर्गुण सभसँ बचवाक होएत। मुखिया, सरपंचकेँ सदाचारी, न्यायप्रिय आ ईमानदार बनए पड़तैक। तखने गाममे शाँति आओत। लोकमे प्रेम आ सहयोग बढ़त।

□□□

डॉ. भीमराव अंबेदकर

डॉ. भीमराव अंबेदकर एक महान् राष्ट्र-निर्माता छलाह। परतंत्र भारतक स्वाधीनता संग्रामक ओ प्रमुख योद्धा रहथि। परम्परावादी हिन्दुत्वक तत्कालीन रूढ़ित विघ्न-बाधा सभ हनुक प्रतिभाक आभाकेँ अवरुद्ध नहि कए सकल। उत्पीड़ित लोकक मुक्तिक लेल अम्बेदकर देवदूत बनिकेँ आएल छलाह। ओ संघर्षक शंखनाद कएने छलाह। भारतवर्षकेँ कल्याणकारी सांविधानिक स्वरूप प्रदान करबामे हुनक महती योगदान छनिह।

हुनक जन्म 14 अप्रिल, 1891 केँ मध्यप्रदेशक महु छावनीमे भेल छलनिह। हुनक पिता सेनामे कर्मचारी छलथिनिह समाजक अछूत वर्गमे उत्पन्न हेबाक कारणेँ अम्बेदकरमे नेनपनेसँ संघर्ष लेल शंखनाद करबाक संसार जागृत भेल। हुनक विकास आ विद्यार्जनमे हिन्दुत्वक जातिवादी-व्यवस्था सदति व्यवधान देलक। परञ्च अपन उत्कट इच्छा-शक्तिक बलेँ सगर बाधाकेँ पदाक्रान्त करैत, अम्बेदकर 1908 मे मुम्बई विश्वविद्यालयसँ हाई स्कूलक परीक्षा उत्तीर्ण कएलनिह। तत्कालीन रूढ़िग्रस्त समाजमे कोनो अछूत लेल ई विस्मयकारी घटना छल। मुदा अपन अथक परिश्रम एवं संकल्पक जोरपर ओ सतत् आगाँ बढ़ैत गेलाह। 1912 मे ओ मुम्बइ विश्वविद्यालयसँ राजनीतिशास्त्र आ अर्थशास्त्रमे स्नातकक इम्तिहान पास कएलन्हि। तत्पश्चात् बड़ौदा राज्यमे ओ नोकरी पकड़ि लेलन्हि। इएह समय छल जखन हुनक पिताक देहावसान भए गेलनिह। बड़ौदा महाराज छात्रवृत्ति दए हुनका प्रोत्साहिक केलक आओर उच्च अध्ययन हेतु अमेरिका पठओलक। ओतए कोलंबिया विश्वविद्यालयमे हुनक नामांकन भेल। 1912 मे भारतक कोनो अस्पृश्य जातिमे उत्पन्न कोनो व्यक्ति लेल ई एक महान् उपलब्धि आ गौरवक गप छल। ओतए हुनका पी-एच.डी. उपाधि भेटलनिह। हुनक शोधग्रन्थ 'द एवूल्यूशन ऑफ प्रोविशियल फिनांस इन ब्रिटिश इंडिया' क नामसँ प्रकाशित भेल। अपन लंदन प्रवासमे 1920-23 क अवधिमे ओ 'द प्राब्लम ऑफ द रूपि' नामक शोधग्रन्थकेँ पूर्ण कएलन्हि जाहिपर हुनका डी.एस-सी. क उपाधिसँ अलंकृत कएल गेल। एहिसँ पहिने मुम्बईमे प्रोफेसरी सेहो कएने छलाह, संगहि 'मूकनायक' नामक मराठी साप्ताहिक पत्रो बहार कएने रहथि। विदेशी अध्ययन समाप्त कए ओ 1923 मे भारत घुरलाह। तहियासँ लए मृत्युपर्यन्त धरि ओ अछूतक उद्धार एवं राष्ट्रनिर्माण लेल निरन्तर संघर्ष कएलन्हि।

अछूतक उद्धार लेल 1923 मे अम्बेदकर 'बहिष्कृत हितकारिणी सभा' क स्थापना कएलनिह। किएक जे ओहि कालमे अछूतकेँ मन्दिर-प्रवेश वर्जित छल। सार्वजनिक इनार आ पोखरिसँ पानि लेबा आ छूबापर मनाही रहैक। तेँ डॉ. अम्बेदकर एकर विरुद्ध अहिंसक आन्दोलन प्रारम्भ कएलन्हि। नासिकक कालाराम मन्दिरमे अछमत सभहिक प्रवेशक सफल रहल। चाउद्धार टैंक आन्दोलनमे सार्वजनिक स्थानपर ओ मनुस्मृतिक प्रति सभकेँ आगिमे आहुति देलनिह। हुनक संघर्षक कारणेँ रैम्जेमैकडोनाल्ड कम्यूनल अवार्डक माध्यमे अछूत सभहिक लेल पृथक चुनाव-क्षेत्रक प्रावधान केलक। परञ्च गाँधीजीक आमरण अनशनपर बैसलासँ ओ हुनकासँ समझौता कएलन्हि, जे पूना-पैक्टक नामसँ जानल जाइत अछि। एहि पैक्टक अनुसार अछूत सभकेँ सरकारी सेवा आ विधान सभामे आरक्षण देल गेल। एहिसँ शिक्षा अओर सरकारी विभागमे अस्पृश्य लोकनिकेँ सेवाक अवसर उपलब्ध भेलैक। हुनका मताधिकारक अधिकार सेहो

भेटलन्हि। लंदनमे आयोजित तीनू गोलमेज सम्मेलनमे अम्बेदकर साहेबकेँ ससम्मान आमंत्रित कएल गेलन्हि। ओहिमे भाग लए ओ दलितक पक्षकेँ सुदृढ़ कएलन्हि। 1935 मे मुम्बइक गवर्नमेन्ट लॉ कओलेजक हुनका प्राचार्य नियुक्त कएल गेल। ओ स्वतन्त्र लेबर पार्टीक स्थापना कएलन्हि आ मुम्बइ विधान सभाक चुनावमे विजयी भेलाह। एक विधायकक रूपमे ओ जागीरदारी-प्रथाक समाप्ति एवं कल-कारखानामे खटनिहार श्रमिक हड़तालक अधिकार लेल संघर्ष कएलन्हि। 1939 केर द्वितीय विश्वयुद्धमे नाजी आ फासीवादक विरुद्ध ब्रिटेनकेँ मदति देबा लेल ओ भारतीय जनमानसकेँ सेनामे भर्ती हेएबा लेल आह्वान कएलन्हि। 1947 मे कानून मंत्रीक रूपमे मंत्रिमंडलमे शामिल भेलाह। स्वतन्त्र भारतक संविधान-निर्माण हेतु प्रारूप समिति गठित कएल गेल, अम्बेदकर तकर अध्यक्ष नियुक्त कएल गेलाह। संविधान प्रारूप समितिक अध्यक्षक रूपमे 1948 में संविधानक प्रारूप संविधान-सभामे प्रस्तुत कएलन्हि। आंशिक संशोधनक उपरान्त ई प्रारूप स्वीकृत भए गेल। संविधान-निर्माताक रूपमे अछूत, दलित एवं अस्पृश्य लोकनिक उत्थाल लेल ओ संविधानमे अनेक अनुच्छेद जोड़लन्हि। सामाजिक न्याय, स्वतन्त्रता, शिक्षा, एकता आ सम्मान अवसरक अधिकारक संविधानमे व्यवस्था करओलन्हि। ओ क्षेत्रीय भाषाक विकासक समर्थन कएलन्हि। भाषापर आधारित राज्यक सेहो ओकालति कएलन्हि आ अंग्रजीक संग सम्पर्क भाषाक रूपमे हिन्दीक समर्थन कएलन्हि। मुदा हिन्दू कोड बिलक विषयपर नेहरू सरकारक संग मतान्तरक कारणेँ ओ केंद्रीय मंत्रिमंडलसँ त्यागपत्र दए देलन्हि आ 14 अक्टूबर, 1956 केँ अपन असंख्य समर्थक सभहिक संग समतावादी बौद्धधर्मकेँ स्वीकारि हिन्दू-धर्मसँ सम्बन्ध-विच्छेद कए लेलन्हि। ओ 'बुद्ध और उनका धम्म' विषयक एक महत्वपूर्ण पोथीक रचना कएल। अनेक विदेशी भाषामे एकर अनुवाद भेल।अविराम चिरविद्रोही योद्धा एवं उत्पीड़ित लोकनिक ई देवदूत 6 दिसम्बर 1956 केँ परलोक लेल प्रस्थान करए गेलाह।

अपन प्रखर तर्क-शक्ति, प्रकांड विद्वता, अप्रतिम जिजीविषा आ विधि-ज्ञानक कारणेँ ओ आधुनिक मनुक संज्ञासँ मंडित भेलाह। अम्बेदकर मनु, जनक एवं याज्ञवल्यक परम्पराक महान् चिन्तक, विचारक आ मंत्र-द्रष्टा ऋषि छलाह। स्वतन्त्र भारतक संविधान निर्माता आओर प्रधान शिल्पकारक रूपमे ओ सदैव अमर रहताह। हुनक देखाओल बाटक अनुसरण आ हुनक शिक्षाकेँ ग्रहण करबे हुनका प्रति कृतज्ञ राष्ट्र द्वारा समर्पित सुच्चा सम्मान होएत।

रेडियो

छोट-सन निर्जीव यंत्र, मुदा वातावरणकेँ सजीव बनाए देनिहार, जादूक पिटारा थिक रेडियो। नगर-नगर, गाम-गामक श्रृंगार केनिहार एहि सुलभ वस्तुक कतबो प्रशंसा कएल जाए, थोड़ अछि।

पदार्थ कखनो नष्ट नहि होइत अछि-विज्ञानक एही मूल-मंत्रपर रेडियोक आविष्कार भेल। हम जे किछु बजैत छी, से ध्वनितरंग बनिकेँ वायुमंडलमे व्याप्त भए जाइत अछि। रेडियो ओही सभकेँ पकड़िकेँ हमरा लोकनिक सोझाँ प्रस्तुत करैत अछि। तूफानमे तार टूटि गेलापर तारक मार्फत समाचार पठेबामे बड़ दिक्कत होइत छल। तेँ बिनु तारक सेहो तार पठाओल जाए सकए, एहि लेल चेष्टा प्रारम्भ भेल। एहि क्रममे भारतीय वैज्ञानिक श्री जगदीश चन्द्र बसु द्वारा कैकटा परीक्षण कएल गेल, परञ्च सफलताक श्रेय इटलीक वैज्ञानिक मार्कोनीकेँ भेटलन्हि। मार्कोनी ओही प्रयोग एवं परीक्षण सभक आधारपर 1921 मे रेडियोक आविष्कार कएलन्हि।

रेडियो समस्त सृष्टिकेँ एक सूत्रमे बान्हि देन अछि। 'वसुधैव कुटुम्बकम' केर सुच्चा रूपमे उद्घोषक इएह थिक। आइ धरतीक कक्षामे उपग्रह इन्सैट-1 बी केर स्थिर हेबाक खबरि सुनिकेँ हम हर्षित भए उठैत छी। हमर वैज्ञानिक सम्भावना सभहिक आन्हर दोगमे एक ज्योति चमकि उठैत अछि। विश्वक कोनो भागमे आतंकवादी षड्यंत्रक सूचना पाबि हमरा लोकनि आक्रोशित भए जाइत छी तँ दोसर दिस कोनो भारतीयकेँ नोबेल पुरस्कार भेटबाक समाचारसँ मनमे वसंत सदृश हरियरीक आभास होमए लगैत अछि। संसारक कोनो कोनमे समान्य-सन घटना घटैत अछि तँ रेडियो द्वारा तकर जानकारी पबैत छी, प्रभावित होइत छी।

रेडियोसँ हम मात्र रंग-बिरंगक समाचारेटा नहि सुनैत छी, मनमाफिक संगीतक आनन्द सेहो लैत छी। शास्त्रीय संगीत होएए वा सुगम संगीत, लोकगीत हुअए किंवा फिल्मी-संगीत, रेडियोक, स्वीच घुमाउ आ सबटा हाजिर। काव्य इतिहास, राजनीति, दर्शन, विज्ञान-बिरले कोनो विषय होअए जाहिपर रेडियोमे भाषण, परिसंवाद-गोष्ठीक आयोजन नहि होइत होअए। स्कूली विद्यार्थी सभहिक लेल अओर विश्वविद्यालयक छात्र हेतु एहिमे पृथक-पृथक कार्यक्रम रहैत छैक। नेना लोकनि जँ 'बाल-मंडली, 'घरौंदा' सँ मन बहटारैत छथि, स्त्रीगण जँ 'नारी-जगत' आ 'आँगन' सँ प्रसन्नचित्त होइत छथि तँ कृषक समुदाय 'चौपाल' सँ कृषि विषयक जानकारी प्राप्त कए तदनुकूल अपन योजना बनबैत छथि। एहि तरहेँ, रेडियोमे भिन्न-भिन्न वएस आ रुचिक अनुसार कार्यक्रम प्रस्तुत कएल जाइत अछि।

विज्ञानक प्रसंग कहल जाइत छैक जे ई मानवताक संहारक बहुत रास साधनक ओरिआओन कए देने अछि, मुदा ई एहनो किछु पदार्थक आविष्कार केलक-ए, जे अत्यन्त उपयोगी एवं आपत्तिरहित अछि। ताहिमे रेडियोक नाम सर्वप्रथम लेल जाए सकैत अछि।

रेडियो विज्ञानक अभिशाप नहि, वरदान थिक। ई मानवताकेर संहारक नहि, श्रृंगार केनिहार अछि।

अहाँक प्रिय कवि

मैथिली साहित्यकारमे देदीप्यमान नक्षत्र जकाँ जे विगत सात सै बरखसँ निरन्तर चमकैत आबि रहल छथि, सएह दिव्य-पुरुष, कविकण्ठहार विद्यापति हमर सर्वाधिक प्रिय कवि छथि। महाकविक आविर्भाव कालमे मुसलमानी सल्तनत भेलाक कारण हिन्दू धर्म आ संस्कृतिक बचनाई अत्यन्त कठिनगर भए गेल छल। एहि भीषण संकटक क्षणमे महाकविक काव्य-रचना महान् प्रेरणा-स्त्रोक काज कएलक। ओ मानवक मास-पीड़ाकेँ जनसाधारणक समक्ष प्रस्तुत कए अपन रचनाकेँ कालजयी बनाए लेलन्हि। संस्कृत, मैथिली आ हिन्दी तीनू साहित्यमे महाकविक नाम अत्यन्त आदरक संग लेल जाइत अछि। ओना भाषाक दृष्टिसँ महाकविक रचना क्रमशः संस्कृत, अवहट्ठ एवं मैथिली तीन भाषामे उपलब्ध होइत अछि। संस्कृतक प्रमुख रचना अछि-पुरुषपरीक्षा, लिखनावली, भू-परिक्रमा, दानवाक्यावली, गंगावाक्यावली, दुर्गाभक्तितरंगिणी, गया पत्तलक आ वर्षकृत्य। अवहट्ठ भाषामे कीर्तिलता ओ कीर्तिपताका दुइ गोट रचना अछि। तेसर भाषा मैथिलीमे हिनक रचना अछि-पदावली। हिनक पदावली मिथिलाक सीमाकेँ टपि नेपाल, बंगाल, आसाम एवं उड़ीसाक सीमा धरि पसरि गेल। बंगालक चैतन्य महाप्रभु महाकविक निम्न गीत गबैत ततेक मग्न भए जाइत छलाह जे अपन सुधि-बुधि बिसरि मुर्च्छित भए जाइत छलाह। गीत पाँती अछि-

"सखि हे हमर दुखक नहि ओर

ई भर बादर माह भादर

शून मन्दिर मोर"

वर्तमान शताब्दीक विश्वकवि रवीन्द्रनाथ टैगोर जे बंगाल नहि, भारते नहि, विश्वक सर्वोच्च साहित्यिक उपाधि 'नोबेल पुरस्कार' सँ सम्मानित भेलाह तनिको काव्य-रचनाक प्रेरणा महाकवि विद्यापतिएक पदावली पढ़िकेँ भेटलन्हि। ओ ततेक प्रभावित भेलाह जे पदावलीक अनुकरणमे सर्वप्रथम रचना भानु सिंहेर पदावली' नामसँ लिखलन्हि जे बादमे 'ब्रजबुलि भाषाक गीत कहि सम्मानित भेल।

संस्कृतक पंडित भेलाक कारणेँ पहिने तँ महाकवि संस्कृतमे कतोक रास रचना प्रस्तुत कएलन्हि, तत्पश्चात् अवहट्ठ रचना। एहिमे 'कीर्तिलता' क प्रथम पल्लवमे भाषाक प्रति हिनक गर्वोक्ति निम्न पाँतीमे द्रष्टव्य अछि-

"बालचन्द्र विज्जावई भाषा, दुहु नहि लग्गइ दुज्जन हासा।

ओ परमेसर हर सिर सोहइ, ई निच्चइ नाउउर मन माहइ"॥

पुनः संस्कृत, प्राकृत ओ अवहट्ठ भाषाक गुण-दोषक विवेचन करैत अन्तमे देशी भाषाक उत्कृष्टताक प्रतिपादन करैत महाकवि लिखने छथि-

"सक्कय वाणी बहु न भावइ, पाउनर रस को मम्म न पावइ।

देसिल वयना सव जन मिट्ठा, तञे तैसन जंपञो अवहट्ठा।।

अवहट्ठक पश्चात देशी भाष अर्थात् जनभाषा वा लोकभाषामे महाकवि अपन सभसँ विशिष्ट रचना पदावलीक सृजन कएलन्हि । जँ आन रचनाकेँ छोड़ि पदावली साहित्य मात्रपर दृष्टिपात कएल जाए तँ महाकविकेँ मैथिलीए साहित्य नहि, भारतीय भाषा साहित्यमे अमरत्व करबाक लेल यथेष्ट अछि।

पदावली साहित्य मुख्यत: तीन कोटिक अछि–देवती–देवता विषयक भक्ति पद,शृंगारिक पद एवं व्यवहारिक पद। तीनू कोटिक रचना उपर्युपरि अछि। भक्ति पदमे गोसाउनि राधा–कृष्ण, गंगा, शंकर–पार्वती आदिक गीत, शृंगारिक पदमे राधा–कृष्णकेँ सामान्य पति–पत्नीक रूपमे ओ अध्यात्म रूपमे, व्यावहारिक पदमे मांगलिक अवसर एवं पाबनि–तिहारसँ संबंधित गीतक रचना प्रधान अछि। तीनू कोटिक रचनामे नारीक विविध स्वरूपक चित्रण अत्यन्त मार्मिक भेल अछि। नारी समाजक नाड़ीक धड़कन जेना महाकवि अपन कानसँ सुनैत होथि। गुप्तसँ गुप्त नारीक मनोदशाक चित्रण जेना हिनक पदावलीमे सद्य: साकार भए रहल अछि।

एहि सभ आधारपर महाकविक रचनाक विषयमे किछु कहब पृष्टपोषण मात्र होएत तथापि जतबा कविक विषयमे जानकारी प्राप्त भेल अछि ताहिमे विद्यापति हमर सर्वाधिक प्रिय कवि छथि।

पुस्तकालय

पुस्तकालय थिक पुस्तकक आलय। एहिठाम साधारणत: पुस्तक संगृहीत रहैत अछि। एतय सामान्यो जनता-जनार्दन जाति-पाँति आ धर्म-कर्मक भेदभाव मेटाए पुस्तक आ पत्र-पत्रिका नियत समयपर पढ़ि सकैत छथि आ विविध प्रकारक ज्ञानक अर्जन कऽ सकैत छथि। कोनो एक व्यक्ति सब विषयक कोन कथा, एको विषयक सब पोथी खरीदकेँ एकत्र कए राखथि से सम्भव नहि। अतएव ज्ञान-गंगा सभहिक लेल उपलब्ध भए सकए तेँ पुस्तकालय स्थापनाक प्रयोजन पड़ल।

पुस्तकालय कैक तरहक होइत अछि- (1) सार्वजनिक पुस्तकालय (2) संस्थागत पुस्तकालय (3) वैयक्तिक पुस्तकालय (4) राजकीय पुस्तकालय (5) राष्ट्रीय पुस्तकालय (6) चलन्त पुस्तकालय आदि। सार्वजनिक पुस्तकालय सभहिक लेल खुजल रहैत अछि। संस्थागत पुस्तकालय विद्यालय, महाविद्यालय आ विश्वविद्यालय स्तरपर उपलब्ध रहैत अछि। एहिसँ ओहिठामक छात्र आओर शिक्षक-वर्ग लाभान्वित होइत छथि। वैयक्तिक पुस्तकालय विद्या व्यसनीक वैयक्तिक उपयोग लेल होइत अछि। विश्वक पैघ-पैघ विद्वानक ओतए पुस्तकक विशाल संग्रह भेटत जे प्राय: अपन जीवनकालमे कोनो संस्थाकेँ दान कए दैत छथिन्हि। जेना श्री अरविन्द अपन पोथीक विशाल संग्रह बड़ौदा विश्वविद्यालयकेँ दान कए देलन्हि। बिहारमे डॉ. सच्चिदानन्द सिन्हा, खुदाबक्स खाँ, डॉ. श्रीकृष्ण सिंह वैयक्तिक पुस्तकालय आब सार्वजनिक पुस्तकालय बनि गेल अछि।

पुस्तकालयसँ अनेक लाभ अछि। प्रकृतिक कोनो सौन्दर्यक भाव-चित्रण आ संगीतक सहयोगी साधन पत्र-पत्रिका आ पोथीक पृष्ठमे विद्यमान रहैत अछि। अत:, एहि विद्या-मन्दिरमे अयनिहार विद्यार्थी विद्यादायिनीक विमल वरदान पाबि विद्वान् बनैत छथि। सभ्यता आ संस्कृतिक संचित ज्ञानकोषक अध्ययन-मनन आओर चिनतनमे ई साहित्य-सदन सदिखन, सदैव आ सर्वथा सभक लेल समान रूपेँ लाभकारी होइत अछि। ज्ञानार्जनक लेल भूखल मस्तिष्ककेँ एहिठाम सम्यक, समीचीन आ सार्वभौम समाधानक साधन समुपस्थित रहैत छैक। गणतंत्र देशमे सभहुँ देशवासीकेँ रुचि, प्रवृत्ति आ प्रकृतिक अनुकूल आगाँ बढ़बामे सुन्नर सहायक भए पुस्तकालय महान् लाभकारी प्रमाणित होइत अछि। एतय ज्ञानोदय एवं अज्ञानास्त संगहि होइत अछि। पुस्तकक अवलोकनसँ लोककेँ आत्मपरिचय भेटैत छैक। समान भाव, विचार आ प्रवृत्तिक उदय कए पुस्तकालय एकताक सूत्रकेँ सुदृढ़ बनबैत अछि। निरक्षरताक निवारण कए ई समाजक अभ्युत्थानमे सहायक सिद्ध होइत अछि।

वस्तुत: एहन लाभप्रद पुस्तकालयकेँ प्रोत्साहन देब जनकल्याणकारी काज अछि।

हमर देश भारत

हमर देशक नाम भारतवर्ष अछि। एकर 'भारतवर्ष' नाम किएक पड़ल? एहि सन्दर्भमे अनेक मान्यता अछि। 'ब्रह्माण्डपुराण' क अनुसार, प्रजाक भरण-पोषण करबाक कारणेँ मनुकेँ भरत कहल गेलन्हि आओर भरत द्वारा प्रतिपालित भेला सन्ताँ ई देश भारतवर्षक संज्ञासँ अभिहित भेल। पुन: इहो कथा प्रचलित अछि जे नाभिक पौत्र भरतक नामपर एहि देशक नाम भारतवर्ष पड़ल। एहनो आख्यान छैक जे दुष्यन्तक सिहदन्तगणक पुत्र भरतकेर नामपर एहि वीरभूमिक नाम भारत पड़ल।

हमरा लोकनिक देशक अतीत बड़ गौरव आ उज्ज्वल अछि। ई राष्ट्र वेद-प्रणेता ऋषि लोकनि, राम, कृष्ण, वाल्मीकि, व्यास, बुद्ध, महावीर, शंकराचार्य, तुलसीदास, कबीर, सुभाष, रवीन्द्र, महात्मा गाँधी सन महापुरुष सभहिक जन्मभूमि रहल अछि। ई प्राचीने कालसँ जगद्गुरुक महिमासँ मण्डित अछि। सभ्यता एवं संस्कृतिक सूर्योदय सभसँ पहिने एहीठाम भेल। हम सभकेँ प्रेमरूपी पानिसँ सिंचलहुँ, कहिओ ककरो पददलित करबाक प्रयत्न नहि कएलहुँ। आइओ जखन संसारमे तानाशाहीक नग्न नृत्य चलि रहल अछि, हमरा लोकनिक जनतंत्र खिलैत कमल सदृश सौरभ बिहलि रहल अछि। विश्वमे जतय धर्म आ वर्णक नामपर रक्तपात मचल अछि, हम धर्मनिरपेक्षताक मंत्रोच्चार कऽ रहल छी। समस्या सभसँ आक्रान्त सृष्टि आइ सेहो समाधान लेल हमरा दिस आँखि लगौने अछि। इएह हेतु थिक जे जयशंकर प्रसादक 'चन्द्रगुप्त' नाटकमे विदेशी कन्या कार्नेलिया हमर राष्ट्रक वन्दना करैत अछि-

अरुण यह मधुमय देश हमारा,
जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा।

हमर देश की थिक? विधाताक कारीकगरीक सर्वोत्तम नमूना थिक। एकर उत्तरमे देवात्मा हिमालय रजतकिरीट-सन ठाढ़ अछि, तँ दक्षिणमे हिन्द महासागर अपन लहरिक अनगिनत हाथसँ एकर पएर पखारैत अछि। एकर ग्रीवामे गंगा, यमुना, सिन्धु, ब्रह्मपुत्र सदृश सरिताक मुक्तामाला सुशोभित अछि, तँ डाँडमे कृष्णा, कावेरी, नर्मदा सदृश नदी सभहिक अनमोल करधनी। एकर क्षेत्रफल 12 लाख, 61 हजार 597 वर्गमील अछि। उत्तरसँ दक्षिण धरि एकर लम्बाई दू हजार मील छैक, तँ पूरबसँ पश्चिम धरि साढ़े अठारह सैय मील। विस्तारक दृष्टिएँ संसारमे हमर देशक सातम स्थान अछि। एकर जनसंख्या 100 करोड़सँ अधिक छैक आ ताहि दृष्टिएँ संसारमे एक दोसर स्थान अछि। हमर देशक संविधानमे चौबीस भाषाकेँ मानयता प्राप्त छैक परञ्च राष्ट्रभाषा हेबाक सुयोग हिन्दीकेँ भेटलैक।

बंकिमचन्द्र चटर्जीक शब्दमे, हमर देशक धरती शस्यश्यामला, सुजला, सुफला एवं मलयजशीतला अछि। भारतवर्ष मानव महासागर थिक, जाहिमे विभिन्न जातिक नदी सभ मिलिकेँ एकाकार भए गेल अछि। सम्पूर्ण विश्वमे सर्वाधिक प्राचीन आ विलक्षण हमरा लोकनिक संस्कृति थिक। इएह कारण अछि जे सृष्टिक पैघसँ पैघ सभ्यतासँ युक्त राष्ट्रक अस्तित्व समाप्त भए गेल, मुदा हम सगर आक्रमणक गरल पीबिओकेँ मृत्युंजय बनल रहलहुँ। हमर एहि कनकशस्य एवं कमल धारण केनिहार देशमे यदाकदा दुर्भिक्षक विभीषिका सेहो दृष्टिगोचर होइत अछि, ज्ञानकेर पहिल ऋचा देमयवला राष्ट्रमे सेहो निरक्षरता मिटएबाक अभियान करय पड़ैत छैक, मुदा हमरा लोकनि एहिसँ कहओ हतोत्साहि नहि भेलहुँ। जावत् धरि हम भारतवासीक देहमे श्वासक स्पन्दन अछि, तावत् धरि एकरा उन्नतिक शिखरपर लऽ जएबाक चेष्टा करैति रहब। धन्य थिकहुँ हमरा लोकनि जे 'स्वर्गादपि गरीयसि' भारतभूमि जन्म लेलहुँ। सत्ये, अखिल विश्वमे हमर भारत देश अनुपम अछि।

दूरदर्शन

दूरदर्शन मानवताक आँचरिमे विज्ञानक अलौकिक उपहार अछि। ई विज्ञान द्वारा अविष्कृत शताधिक आश्चर्यजनक आविष्कारमे सर्वथा अनुपम आविष्कार थिक। आजुक युगग अद्‌भुत देन थिक दूरदर्शन। आकाशवाणीसँ हम वार्त्ताकार लोकनिक वार्त्ता सुनैत छी। नेतागण, लेखकवृन्द आ विचारक लोकनिक सन्देश आ विचारसँ लाभान्वित होइत छी। गीतकार, गायक आ कविगणक कंठसँ बहार भेल सरस स्वरक माधुर्यमे हम लीन भए जाइत छी। सुगम एवं शास्त्रीय संगीतक झंकार आओर साज सभहिक मधुर ध्वनिक मोहिनी शक्तिसँ हम सम्मोहित भए जाइत छी। मुदा, मन उक्त कविगण, गीतकार, लेखक, नेता आ संगीतकार सभहिक एक दृष्टि देखबा लेल व्यक्त भए उठैत अछि। परञ्च आकाशवाणी लेल ई सम्भव नहि थिक। मन आ आँखिक ओहि क्षुधाक अन्त दूरदर्शन कऽ देलक-ए। आइ घरे-घर सर्वत्र एकर धूम छैक।

दिल्लीसँ मनमोहन सिंह बजैत होथि वा अमेरिकासँ बराक ओबामा, दूरदर्शनक बटन दबबैत हुनका लोकनिक आकृतिकेँ यथावत् बजै देखि पबैत छी। हम हुनक रूप-रंग आ हाव-भावकेँ बिनु कोनो बदलावक देखि सकैत छी। विश्वकप क्रिकेट आ ओलंपिक खेलमे कतेक रोमांच रहैत छैक। खेलक आयोजन होइते सम्पूर्ण विश्वमे चहल-पहल बढ़ि जाइत छैक। जाहिठाम ई खेल आयोजित होइत छै, ओ नगरी सोलाहे श्रृंगारसँ सुसज्जित भेल नवकनिआ जकाँ लगैत अछि। संसार भरिक प्रतियोगी लोकनिक शक्ति, सामर्थ्य, भाव-भंगिमा एवं स्फूर्ति सद्यः देखि हम कतेक हर्षित होइत अछि। एहि आयोजन सभकेँ देखय बड़का-बड़का धनाढ्य लोक जा पबैत छथि। विश्वक असंख्य लोक टाकाक अभावमे स्थलपर पहुँचि खेल नहि देखि पबैत छथि। मुदा हमरा लोकनिकेँ कृतज्ञ हेबाक चाही दूरदर्शनक जे घर बैसल अखिल विश्वक दिग्दर्शन हमरा सभकेँ करा दैत अछि। स्वदेशमे आयोजित स्वतन्त्रता दिवस आ गणतन्त्र दिवस समारोहक देखक लेल कतेक लोक दिल्ली जा पबैत छथि? मुदा दूरदर्शन घर बैसल एकरा सुलभ कऽ देने अछि। एकर आविष्कारसँ आब अति पिछड़ल क्षेत्रमे सेहो सभ वयस, विभिन्न आर्थिक स्तरक लोक विश्वक कोनो क्षेत्रमे होइत घटनावलिकेँ देखि सकैत छथि।

रामायण, महाभारत, कृष्ण सन धार्मिक धारावाहिक कँ देखाए दूरदर्शन मनुक्खकेँ अपन अतीतक प्रति श्रद्धा प्रगट करबैत अछि। उक्त धारावाहिक देखबा लेल लोक अपन सबटा व्यस्तताकेँ छोड़ि दूरदर्शन सेटकेर आगाँ समयसँ पूर्व बैसि जाइत छल। दर्शककेँ एकरा माध्यमसँ सांस्कृतिक विरासतकेँ प्रत्यक्ष देखबाक सुअवसर भेटैत छैक।

साहित्य आ पुराणसँ ज्ञात होइत अछि। जे अपना ओहिठाम पुरातन युगमे सिद्ध साधक लोकनि, ऋषि-मुनि लोकनि आ तपस्वी सभकेँ दिव्य दृष्टि प्राप्त रहन्हि। हस्तिनापुरक राजप्रसादमे आन्हर धृतराष्ट्रक लग बैसल संजय ओतएसँ बहुत दूर कौरव आ पाण्डवक मध्य होइत कुरुक्षेत्रक महाभारत युद्धक हाल ठीक ओहिना सुनबैत छलाह, जेना आइ-काल्हि खेलक मैदानसँ उद्घोषक खेलक ताजा स्थितिक उद्घोष करैत छथि। बहुतो लोकक विश्वास छनि जे संजयक दिव्य-दृष्टि दूरदर्शनक दिव्य-शक्ति छल आ हमर प्राचीन भारतमे सेहो दूर-दर्शनक अस्तित्व छल।

आजुक संसारमे सर्वप्रथम 1923 ई. मे दूरदर्शनक आविष्कार इंगलैण्डमे भेल। एकर आविष्कारकर्त्ता जॉन लागी बेयर्ड नामक वैज्ञानिक छलाह। 1926 ई. मे लंदनमे एकर प्रसारण प्रारम्भ भेल। इंगलैण्डक सीमाकेँ पार कऽ शीघ्रे दूरदर्शनक लोकप्रियता समस्त योरोपमे पसरि गेल। 1935 मे जर्मनीमे सेहो एकर प्रसारण प्रारम्भ भऽ गेल। 1941 ई. मे अमेरिकामे सेहो दूरदर्शनक प्रसारण आरम्भ भेल। अपन आविष्कारक साठि बरखक बाद दूरदर्शन विश्वव्यापी भऽ गेल। 1959 ई. क 15 सितम्बरसँ भारतोमे (दिल्ली-केन्द्र) दूरदर्शनक प्रसारण प्रारम्भ भेल। आइ तँ अपना देशक गामे-गाम, टोले-टोल ई व्याप्त भऽ गेल अछि। रंगीन दूरदर्शनक निर्माण सभसँ पहिने 1928 ई. मे भेल एवं 1954 धरि सम्पूर्ण योरोपमे रंगीन टेलीविजनक प्रचार भऽ गेल छल। भारतमे रंगीन दूरदर्शन सर्वप्रथम 1982 मे आएल। आब तँ विवाह-दानमे दूरदर्शन देबाक प्रथा सामान्य भऽ गेल अछि।

दूरदर्शन मनोरंजनक सभसँ उत्तम साधनक रूपमे लोकप्रियता अर्जित कऽ चुकल अछि। आब लोक सिनेमाघर नहि जाकऽ घरेपर बैसल दूरदर्शनमे देखओल जाय रहल सिनेमाक आनन्द उठबैत छथि। आइ दूरदर्शनक व्यापक लोकप्रिय हेबाक कारणेँ आकाशवाणीक महत्त्व कम भऽ गेल अछि। दूरदर्शनमे श्रव्य आ दृश्य दुनू प्रकारक सामर्थ्य छैक। ओ स्वरक संग रूपाकृतिक स्पष्ट झलक सेहो देखबैत अछि। परञ्च, आकाशवाणीमे मात्र श्रव्ये सामर्थ्य होइत छैक। तेँ दूरदर्शनक व्यापक लोकप्रियताक समक्ष ओ दीन-हीन भऽ गेल अछि। शैक्षणिक दृष्टिएँ सेहो दूरदर्शन आइ अधिकाधिक महत्त्व पबैत जा रहल अछि। परंच नवयुवक लोकनिमे दूरदर्शनक कारणेँ अपन अध्ययन आ उत्तरादायित्वसँ आँखि नुकयबाक विनाशी प्रवृत्ति सेहो पनपैत जा रहल छी। ओ सभ दिन-राति आन काजक उपेक्षा कऽ दूरदर्शनसँ प्रसारित कार्यक्रम, सिनेमा एवं खेल-प्रतियोगिताकेँ देखबामे व्यस्त रहय लागल छथि। विशेष कऽ, विश्व-स्तरपर आयोजित होमयवला क्रिकेट प्रतियोगिताक समयमे तँ विद्यालयक कार्यालयमे सभ काज बाधित होमय लगैत अछि। तेँ लाभकारी आ शिक्षाप्रद राष्ट्रीय कार्यक्रम, धरना, वार्त्ता वा सिनेमा देखबाक आदति डालबाक चाही। दूरदर्शनक एहन दिवाना नहि बनि जाय जे हमर वैयक्तिक, पारिवारिक, सामाजिक किंवा राष्ट्रीय विकासे अवरुद्ध वा प्रभावित भऽ जाय।

□□□

मातृभाषाक महत्व

जे भाषा बाल्यावस्थामे शिशुगण मायक कोरासँ सीखैत अछि, सएह मातृभाषा कहबैत अछि। मातृभाषामे नेना कोनो तथ्यकेँ सहजतापूर्वक सीखैत अछि। सभकेँ अपन मायक भाषा मधुर लगैत छैक। तेँ ने कविकण्ठहार विद्यापति लिखने छथि-

'देसिल बअना सब जन मिट्ठा
तेँ तैसन जंपञो अवहट्ठा।।''

मातृभाषाक महत्त्व एतबे थिक जे हनुमानजी जानकीसँ भेट करब काल संशयमे रहथि जे मा सीतासँ कोन भाषामे गप्प करी। अन्तमे निर्णय कएलन्हि जे मातृभाषामे वार्त्ता करी जैसँ सीताकेँ हुनकापर कनेको सन्देह नहि होन्हि।

आइ पाश्चात्य शिक्षाक रंगमे रमल लोक मातृभाषाक कोन कथा, राष्ट्रभाषा पर्यन्तकेँ छोड़ि विदेशी भाषाक माध्यमे अपन शिशुकेँ प्रारंभिक शिक्षा दैत छथि। मातृभाषामे पढ़ब आ पढ़ाएब अपन ठेसी उतरब बुझैत छथि। अंग्रेजीक दुआरा शिक्षा प्राप्त करबामे अबोध शिशुक माथपर जे बोझ राखल जाइत अछि, से भरिगर हेबाक संग-संग अत्यन्त कष्टप्रद होइत छैक। नेनेसँ माता-पिताकेँ मम्मी-डैडी कहलासँ मा-बाबूक यथार्थ मर्मकेँ ओ बुझि सकैत अछि? जे शब्द निरर्थक अछि, जकर उत्पत्तिक कोनो मूलस्त्रोत नहि छैक, तकरा सिखलासँ संस्कारपर की प्रभाव पड़तैक। एहने टेल्ह सभ पैघ भेलापर माय-बापक अवहेलना करैत अछि। विदेशी भाषाक भूत तेना भए कपारपर सवार होइत छैक जे सामान्य लोकहुसँ आचार-विचार भिन्न भए जाइत छैक। आइ जापान अति विकसित देशमे परिवर्तित भए अपन सर्वतोमुखी विकास केलक अछि तकर जड़िमे अपन वस्तुक संगहि मातृभाषा द्वारा जनजागरण करब अछि। मातृभाषाक माध्यमसँ साहित्यहिटाक विकास नहि होइत छैक, संस्कृति आ संस्कारपर सेहो एकर स्थायी प्रभाव पड़ैत छैक। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र सेहो लिखने छथि-

''निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति के मूल
बिन निज भाषा ज्ञानके, मिटत न हिय के शूल''

प्राथमिक शिक्षाक माध्यम ओ मातृभाषाक महत्त्व वस्तुतः एके सिक्काक दू भाग थिक। शिशुकेँ मानसिक रूपसँ स्वस्थ रखबाक कोन कथा, शारीरिक दृष्टिएँ सेहो तंदुरूस्त रखैत अछि मातृभाषाक व्यवहार। इएह कारण थिक जे मनोवैज्ञानिक लोकनि सेहो मातृभाषाक माध्यमसँ प्राथमिक शिक्षाक अनिवार्यताकेँ स्पष्ट स्वीकार कएने छथि। लोकमान्य बालगंगाधर तिलक मातृभाषा द्वारा प्रारंभिक शिक्षाकेँ उचित ओ उपयोगी मानने छथि।

हमर भारत जखन सवतंत्र भेल, प्रान्तीय भाषा सभक आधारपर राज्य सभक नामकरण कएल गेल। यथा-तमिलसँ तमिलनाडु, कन्नड़सँ कर्नाटक, तेलगूसँ आन्ध्रप्रदेश, मराठीसँ महाराष्ट्र, गुजरातीसँ गुजरात, बंगलासँ बंगाल, उड़ियासँ

उड़िसा एवं आसामीसँ आसाम। परंच दुर्भाग्यक बात जे बिहारक भाषा 'बिहारी' कहि राष्ट्रभाषा हिन्दीकेँ मानि लेल गेल। हिन्दी राष्ट्रभाषा भेलाक कारणेँ भारतक सर्वोच्च शिखरपर विराजमान अछिये मुदा क्षेत्रीयताक आधारपर बिहारक कोनो भाषा ई स्थान नहि पावि सकल। आब तँ बिहारमे द्वितीय राजभाषाक श्रेणीमे मैथिलीकेँ जोड़बामे संचर लागल अछि। मैथिलीपर नेतागणक वक्र-दृष्टि पड़ल अछि आ अपनहुँमे टंगघिच्वा सभहिक संख्या सेहो कम नहि अछि। तथापि आब लोकक दृष्टि एहि दिस गेलए। एहि लेल आंदोलनक काज अछि। जे लोकनि पढ़ि-लिखिकेँ मातृभाषाक प्रति अपन अनुराग नहि देखबैत छथि अपितु निजभाषा बजबोमे संकोच करैत छथि, हुनका लोकनिक प्रसंग कविवर सीताराम झा कहैत छथि-

''पढ़ि लिखि जे नै बजैछ निज मातृभाषा मैथिली

मन होइछ झिटुकीसँ तनिक हम कान दुनू ऐँठ ली।।''

तखन एतेक बात अवश्य जे जहियासँ अष्टम अनुसूचीमे मैथिलीकेँ मान्यता भेटलैक, ताहिसँ एहि भाषाक प्रति अनयान्यो लोकमे अनुराग बढ़लैए। संघ लोक सेवा आयोग एवं बिहार लोक सेवा आयोगमे बहुतो प्रतियोगी मैथिलीकेँ एकटा विषय रूपमे रखैत छथि आ हाकिम बनि रहल छथि।

मैथिली बजनिहारक संख्या बहुत अधिक अछि। विदेशोमे रहनिहार मैथिलगण मातृभाषाक उत्थानमे संलग्न छथि। बिहारमे तँ नेपालमे तँ एकरा द्वितीय भाषाक रूपमे स्वीकृति भेटल छैक। आइ के कहए, नेहरूजी बहुत पहिने कहि चुकल छथि जे मैथिली एक समृद्ध भाषा थिक।

मातृभाषा मैथिलीमे रचित मिथिलाक महिमाक गुणगान डॉ. इन्द्रकान्त झाक निम्न पाँतीमे बड़ आकर्षक भेल अछि-

चल चल गुजरिनी मिथिलाक गाम

जतय जनक याज्ञवलक्य छथि महान

आश्रम अछि गौतम कनादिक

सुनिहेँ तूँ टोल टोलपर वेदध्वनि

तकरे तूँ बुझिहेँ मिथिलाक गाम

चल चल गुजरिनी मिथिलाक गाम।

सांप्रदायिकता

मात्र अपन संप्रदायकेँ श्रेष्ठ बुझि ओकर हितक विशेष ध्यान राखब आ दोसर संप्रदायकेँ न्यून बुझि ओकरासँ द्वेष राखब सांप्रदायिकता कहबैत अछि। भारतमे सांप्रदायिकताक इतिहास बड़ पुरान थिक। एकर मुख्य हेतु देशमे विभिन्न संप्रदायक लोकक रहब थिक। पहिलुक समयमे सेहो भारतमे बौद्ध लोकनिक, हिन्दु सभहिक, वैष्णव एवं शैव तथा शाक्त लोकनिक मध्य तर्क-वितर्क अओर हिंसा होइत रहैत छल। विभिन्न संप्रदायक व्यक्ति अपन धर्म एवं आचार-विचारकेँ उत्तम बुझि अन्य धर्मावलम्बीकेँ अपनासँ अधम बुझैत रहथि। एम्हर आबि भारतमे साम्प्रदायिकताक एक नव व्याख्या जन्म लेलक अछि। शनैः शनैः धर्म संप्रदायक आकृति ग्रहण कए रहल अछि। हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, इसाइ आब धर्म नहि, संप्रदाय बनि चुकल-ए। जँ हिन्दू, आ मुसलमानक मध्य दंगा हुअए तँ एकरा सांप्रदायिक दंगासँ सम्बोधन कएल जाइत छैक। देशमे मुसलमान लोकनिक अएलाक बादसँ हिन्दू आ मुस्लिक धर्ममे विवाद आरम्भ भेल।

सांप्रदायिकता राष्ट्रीयताक प्रबल विरोधी होइत अछि। मुगल कालमे इस्लामक नामपर हिन्दु लोकनिपर बड्ड अत्याचार कएल गेल। ओकर कारी अध्यायकेँ पढ़िकेँ आइओ आँखिमे नोर आबि जाइत अछि। राणा प्रताप आ शिवाजीक वीर-गाथा हमरामे एक नव स्फूर्तिक संचार करैत अछि। राष्ट्रीयताक पक्षधर कहियो सांप्रदायिक नहि भए सकैत छथि। राष्ट्रक समर्थक सभ जाति, धर्म, प्रान्त आ भाषा-भाषीकेँ एकहि परिवार आओर समान दृष्टिसँ देखैत छथि। अनादि कालसँ भारतमे अनेक जाति आ वर्ग सभ आएल अछि। ओहिमे सँ किछु भारतक भूमिसँ आकर्षित भए एतुक्के निवासी बनि रहि गेलाह। दोसर दिस कतेको विदेशी एहिठामक सम्पत्ति लूटक लेल आक्रान्ता बनिकेँ अएलाह।आर्य लोकनिक भारत आगमनक उद्देश्य स्थायी निवासी बनब छलन्हि जखनकि अरबक लोक देशक खजाना अपना नामेँ करबा लेल आएल छलाह।

सांप्रदायिकता कोनो राष्ट्रक अभिशाप थिक। प्रत्येक धर्मक अपन वैशिष्ट्य छैक। तकरामे परस्पर मतान्तर छै। ई धार्मिक सम्प्रदाय एक-दोसरसँ झगड़ैत रहैत अछि। धार्मिक अतिवादीक संग राजनीति सटि गेल छैक। धार्मिक अन्धभक्त आ धूर्त राजनेता एहि सांप्रदायिकतासँ लाभ उठबैत छथि। एकर फाँसमे ओझराए जाइत अछि साधारण, अज्ञानी, निरीह जनता। आइ-काल्हि नित्य दंगा-फसाद, मारि-पीट एवं विनाश-लीलाक खबरि अखबारमे छपैत अछि। ई धर्मात्मा आ समाजक अपराधी वर्ग मिलिकेँ देशक नव विध्वंसक तैयारीमे लागल छथि।

भारत एक धर्मनिरपेक्ष देश अछि। एतए सरकारक कोनो धर्म नहि अछि। सभ धर्म स्वतन्त्र छैक। प्रत्येक नागरिककेँ अपन आस्थानुसार धर्म मनेबाक स्वतंत्रता छन्हि। मुदा स्वतन्त्रता प्राप्तिसँ लए एखन धरि सांप्रदायिकताक आगिमे लाखोक सम्पति छाउर भए गेल आ कतेको लोक अपन प्राण गमौलन्हि। आब तँ ठाम-ठाम बम विस्फोट भए रहल अछि। एक संग हजारो लोक क्षत-विक्षत भए रहल छथि। मन्दिर, मस्जिद आ गुरूद्वाराक झगड़ामे सांप्रदायिक तागति एहि राष्ट्रकेँ छिन्न-भिन्न कए रहल अछि। हमरा सभहिक पड़ोसी देश पाकिस्तान तथाकथित शक्तिकेँ धन-जनसँ मदति कए रहल अछि। एहि देशक बटबारा सेहो सांप्रदायिक आधारपर भेल छल। पाकिस्तानक नेतो साम्प्रदायिक तत्त्व

द्वारा देल गेल छल। अंग्रेज हुनक पींठपर छल। एहने सोच छल जे एहि बटबारासँ साम्प्रदायिकता रूपी राक्षसँक अन्त भए जाएत मुदा से भेल नहि।

सांप्रदायिकताक कारण हिन्दू, मुसलमान तथा सिक्ख धर्मक अनुयायीमे भैयारी-भावनाक अन्त भए रहल अछि। देशक एकता आ अखंडता नष्ट भए रहल अछि। परस्पर अविश्वासक वातावरण बनि गेल अछि। राष्ट्रक सुख-शांति दूर भेल जा रहल अछि। समस्त परिवेश हिंसक घटनावलिसँ दूषित भए रहल अछि।

सांप्रदायिकतासँ मुक्तिक लेल सरकारक संग देशक नागरिकक सेहो ई कर्त्तव्य बनैत अछि जे ओ एकर विरुद्ध सजग रहथि। राजनीतिज्ञ दल वोटक राजनीतिक कारणेँ एकरा बढ़ावा दैत दहैत छथि। ओहन व्यक्ति जाति, धर्म, क्षेत्रीयता आ भाषाक नामपर राष्ट्रीय निष्ठाकेँ ठेंगा देखबैत छथि। धर्मनिरपेक्ष गणतन्त्रमे राजनीतिज्ञ लोकनिक ई नीति राष्ट्र लेल घातक अछि।

□□□

वर्षा ऋतु

भारतवर्ष छओ गोट ऋतु होइत अछि। सभ ऋतुक अपन-अपन वैशिष्ट्य होइत छैक; तथापि एहिमे वर्षा ऋतुक वरदान विलक्षण साबित होइत अछि।

ग्रीष्मक प्रचण्ड तापसँ तापित धरती अपन आश्रयमे रहनिहार जीव-जन्तु, गाछ-वृक्षकेँ सन्तप्त देखि वर्षाक आगमनक प्रतीक्षामे लागल रहैत अछि। आजुक विज्ञानक स्वर्ण-युगमे मानव तापक प्रतापसँ त्राण पएबा लेल सम्भावित साधनक सदुपयोग करैत अछि मुदा असफल रहैत अछि।

वर्षाक आगमन होइतहि अवनिसँ आकाश धरि एक विलक्षण आभा पसरि जाइत अछि। गगनमे मेघखण्ड नाँच करए लगैत छैक। झमाझम बरखा झहरए लगैत अछि। मयूरक नृत्य आरम्भ भए जाइत अछि। दादुरक ध्वनि चहुओर सोहाओन लगैत अछि। जंगल-झाड़, गाछ-पात अमृत पीबि हरल-भरल आ लहलहाइत अछि। सभ जीव-जन्तु नव जिनगी पाबि नवल उत्साहसँ उत्फुल्ल भए नवीन भविष्यक आगमनक अनुमानसँ मगन भए उठैत अछि।

खत्ता-खुत्ती, पोखरि-झाँखरि आ नदी, सभक सभ जलसँ भरि जाइत अछि। पानि शहर-बजारक बाट-घाट आ गली-दोगक गंदगीकेँ बहाकेँ पृथ्वीकेँ साफ-सुथरा बनबैत अछि।

वर्षाक पानिसँ खेत-पथार भरि जाइत छैक। आरि-धूर लुकझुक करए लगैत छैक। बाढ़ि अबैत छैक। बाध-बोनमे पानि पसरि जाइत छैक। इजोरिआमे ई पानि चानी जकाँ चमकैत अछि। कृषक मुहपर आनन्दक रेख स्पष्ट द्रष्टव्य होमए लगैत छै। ओ नव उत्साह आ जोशसँ कृषि-कार्यमे लागि जाइत अछि। हरवाह हर-बड़दक संग चलैत मस्त बनल थाकनिकेँ चेतौनी दैत छै। जन-बोनिहार खेतमे रोपनी करैत काल अपन गीतक स्वर-लहरीसँ वायुमंडलकेँ गुंजायमान बनओने रहैत अछि। नेना-भुटकाक पानिमे छप-छप करैत देखब आँखिकेँ सुख पहुँचबैत छैक।

नदी सभमे बाढ़िक सम्भावना बढ़ि जाइत छै। बाढ़िक पानिमे मिश्रित उर्वरा-शक्तिक प्रसादेँ जजातिक उपज बढ़ैत छै। पानिक संग माछक अँमार चलैत छै। धनी-गरीब सभ माछक भोजनसँ जिह्वाकेँ संतोष पहुँचबैत छथि।

प्राकृतिक सौन्दर्य संग वर्षाक बहार, विद्युल्लताक उत्साह, जलदक गम्भीर नीर प्रिय-पियतमाक मधुर-मिलनक आमंत्रण दैत अछि। अतः सहृदय सज्जन कमनीय रमणीय राज्यमे विहार करैत समयक सदुपयोग कए आनन्दविभोर होइत छथि।

वस्तुतः वर्षा ऋतु अत्यन्त लाभाकारी अछि। सन्तप्त धरतीक आननकेँ हरल-भरल बनओनिहार, जीव-जन्तुकेँ नवजीवन देनिहार, बाल-वृद्ध, नर-नारीकेँ आशा आ उत्साह देनिहार ई ऋतु सभकेँ आशान्वित कए अपन-अपन काज-धंधामे विघ्न-बाधासँ लड़ई लेल उत्साहित करैत अछि।

दीया-बाती (दीपावली)

हिन्दू धर्ममे ओना त' नित्य कोनो-ने-कोनो पाबनि होइते अछि मुदा ताहूमे फगुआ, दशमी आ दीया-बाती प्रमुख अछि। हमरा लोकनिक जिनगीमे इजोत देबएवला दीपावलीक ई पाबनि कार्तिक मासमे अमावस्याक दिन मनाओल जाइत अछि। एकरा ज्योति-पर्व वा प्रकाश सेहो कहल जाइत छैक। एहि दिन अमावस्याक अन्हरिया राति दीया एवं मोमबत्तीक इजोतसँ जगमगा उठैत अछि। वर्षा ऋतुक समाप्तिक संग-संग खेत सबमे ठाढ़ धानक जजाति सेहो तैयार भए जाइत अछि।

एहि पाबनिक वैशिष्ट्य ई थिक जे जाहि सप्ताहमे ई पर्व अबैत छै, ओहिमे पाँचटा पाबनि होइत छैक। एही कारणेँ भरि सप्ताह लोकमे उत्साह आ उमंग बनल रहैत अछि। दीपावलीसँ पहिने धनतेरस अबैत छैक। मानयता अछि जे एहि दिन नव बासन अवश्य कीनबाक चाही। नव बर्तन कीनब शुभ बूझल जाइत अछि। एकर उपरान्त होइत छै छोटी दीपावली, फेर अबैत अछि दीपावली। एकर अगिला दिन गोवर्द्धन पूजा तथा अन्तमे अबैत छैक भरदुतिया पाबनि।

सभ पाबनि जकाँ दीया-बातीक प्रसंग सेहो अनेक धार्मिक आ ऐतिहासिक घटना विद्यमान अछि। एही दिन विष्णु, नृसिंहक अवतार लए प्रह्लादक रक्षा कएने छलाह। समुद्र-मंथन कएलासँ प्राप्त चौदहटा रत्नमेसँ एक लक्ष्मी एही दिन प्रगट भेल छलीह। एक अतरिक्त जैन मतक अनुसार तीर्थंकर महावीरक महानिर्वाण सेहो एही दिन भेल छलन्हि। भारतीय संस्कृतिक आदर्श पुरुष श्री राम लंका नरेश रावणपर विजय प्राप्त कए सीता आ लक्ष्मण सहित अयोध्या घुरल छलाह। हुनक अयोध्या आगमनपर अयोध्यामे रहनिहार लोक भगवान रामक स्वागत लेल रातिमे दीप नेसलन्हि।

ऐतिहासिक दृष्टिसँ एहि दिनसँ संबद्ध महत्त्वपूर्ण घटनामे सिक्ख लोकनिक छठ्य गुरु हरगोविन्द सिंह मुगल शासक आरंगजेबक जहलसँ मुक्त भेल रहथि। राजा विक्रमादित्य एही दिन सिंहासन पर बैसल छलाह। सर्वोदयी नेता आचार्य बिनोवा भावे दीपावलीएक दिन इहलोक छोड़ने छलाह। आर्य समाजक संस्थापक स्वामी दयानन्द एवं प्रसिद्ध वेदान्ती स्वामी रामतीर्थ सन महापुरुष एही दिन मोक्ष प्राप्त कएने छलाह।

ई पाबनि बड़ उत्साहक संग मनाओल जाइत अछि। एकर आगमनक प्रतीक्षा सभकेँ रहैत छैक। मास दिन पहिनेसँ लोक अपन घर-दुआरि, आंगन-बहरी चारूकातक सफाइमे लागल रहैत छथि। दोकानदार सभ अपन दोकानमे साफ-सफाई आ चून करेबामे बहुत पहिनेसँ व्यस्त रहैत छथि। दीया-बाती दिनसँ व्यापारी लोकनि अपन बही-खाता श्रीगणेश करैत छथि। बाजारमे मेला सदृश वातावरण व्याप्त रहैत छैक। बजार तोरणद्वार एवं रंग-बिरंक पताकासँ

सुसज्जित रहैत अछि। मधुर आ पटाखाक दोकान खूब सजल रहैत छैक। एहि दिन बताशा, फरही आ मधुरक अत्यधिक बिक्री होइत अछि। नेना लोकनि अपन इच्छानुसार बम, फुलझड़ी तथा अन्य आतिशबाजी कीनैत छथि।

दीया-बाती दिन रातिमे माता लक्ष्मीक पूजन होइत अछि। एहन कहल जाइत छै जे एहि दिन रातिमे लक्ष्मीक आगमन होइत छन्हि। लोक अपन इष्ट-मित्र ओतए मधुरक आदान-प्रदान कए दीपावलीक शुभकामनाक लेन-देन करैत छथि। वैज्ञानिक दृष्टिसँ सेहो एहि पावनिक अपन एक पृथक महत्त्व अछि। एहि दिन फोड़ल जाएवला पटाखा एवं घरमे भेल सफाइसँ वातवरणमे व्याप्त कीटाणुक अन्त भए जाइत अछि।

गणतंत्र दिवस

स्वतंत्रता दिवसक भाँति गणतंत्र दिवस सेहो एकटा राष्ट्रीय पर्व अछि। प्रत्येक बरख 26 जवनरीकेँ ई पर्व मनाओल जाइत अछि। भारतवर्षक इतिहासमे 26 जनवरी, 1950 क दिन स्वर्णाक्षरमे अंकित अछि। ई दिन भारतीय इतिहासक सभसँ गौरवमय पृष्ट थिक। 1929 ई. मे लाहौरक रावी नदीक तटपर कांग्रेसक एकगोट अधिवेशन भेल छल। एहि अधिवेशनमे स्व. जवाहरलाल नेहरूक नेतृत्वमे देशभक्त लोकनि शपथ लेने रहैथि जे जावत धरि अपना देशकेँ विदेशी शासनसँ मुक्त नहि कराएब, तावत् धरि चैनसँ नहि बैसब। महात्मा गाँधी, सुभाषचन्द्र बोस, राजेन्द्र बाबू सन जुझारू नेता एवं स्वाधीनताक हजारो देशप्रेमी सभ अंग्रेजसँ जुझैत रहलाह। अन्तमे 15 अगस्त, 1947 केँ ओ दिन सोझाँ आएल जखन ब्रिटिश शासनक अन्त भेल आ भारत स्वतन्त्र भेल। तत्पश्चात् 26 जनवरी, 1950 केँ भारतीय संविधानमे प्राण देल गेल, एही दिन संविधानक लोकहितमे लोकर्पण सेहो भेल। गणतन्त्र दिवस देश संप्रुभताक संवाहक थिक। भारतवर्ष आब एक धर्मनिरपेक्ष, कल्याणकारी-राज्य उद्घोषित भेल। एतुक्का प्रत्येक नागरिककेँ आब समान अवसर भेटि सकत, धर्म, जाति वा लिंगक आधारपर कोनो भेद नहि कएल जाएत।

26 जनवरी, 1950 सँ सभ बरख 26 जनवरीकेँ हम गणतन्त्र दिवस समारोह उल्लासपूर्वक मनबैत आबि रहल छी। एहि अवसर पर देशक राजधानी नव दिल्लीमे ऐतिहासिक लालकिलापर राष्ट्रपति महोदय राष्ट्रध्वज फहरबैत छथि, संगहि राष्ट्रकेँ सम्बोधित करैत छथि। सैन्य टुकड़ी अपन शौर्यक प्रदर्शन करैत अछि। देशक विभिन्न प्रान्तक झाँकीक प्रदर्शन कएल जाइत छैक। अपार जन-समूह उनटि पड़ैत अछि देशक गणतन्त्रात्म केर गरिमाक दर्शनार्थ। देशके प्रत्येक क्षेत्रमे उल्लासमय वातावरणमे गणतन्त्र-दिवस समारोह मनाओल जाइत अछि। औद्योगिक, शैक्षणिक आ सरकारी सभ संस्थानमे राष्ट्र-ध्वज फहराओल जाइत अछि। राष्ट्रगान एवं राष्ट्रीय नाराक गुंजनसँ गगन गुंजित भए उठैत अछि। विद्यालय अओर कओलेजमे सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित होइत अछि। स्वातन्त्र्य संग्राममे शहीद भेल राष्ट्रक वीर योद्धाकेँ हमरा लोकनि अभिवादन करैत छी। पूर्वजक प्राणोत्सर्गसँ प्रज्वलित प्रेरणाक ई प्रदीप हमरा सभहिक मार्गकेँ प्रकाशित करैत रहत।

गणतंत्र हासिल करक लेल शताब्दी धरि हम भारतवासीकेँ संघर्ष करए पड़ल। कोटि-कोटि जनताक त्याग-तपस्यासँ पुनर्प्रतिष्ठिक भेल अछि। हमर गणतन्त्रक गरिमा युवक लोकनि यौवन देलन्हि, पुरुष सभ प्राण त्यागन्हि आ स्त्रीगण अपन मान-मर्यादा लुटओलन्हि तखने मातृभूमिक ललाटसँ पराधीनता रूपी कारिख मिटाएल। ने हम जहलक भयावह दंडसँ डरेलहुँ आ ने मृत्यु-दंडक खबरि सुनि एको क्षण लेल हमर देह सिहरल।

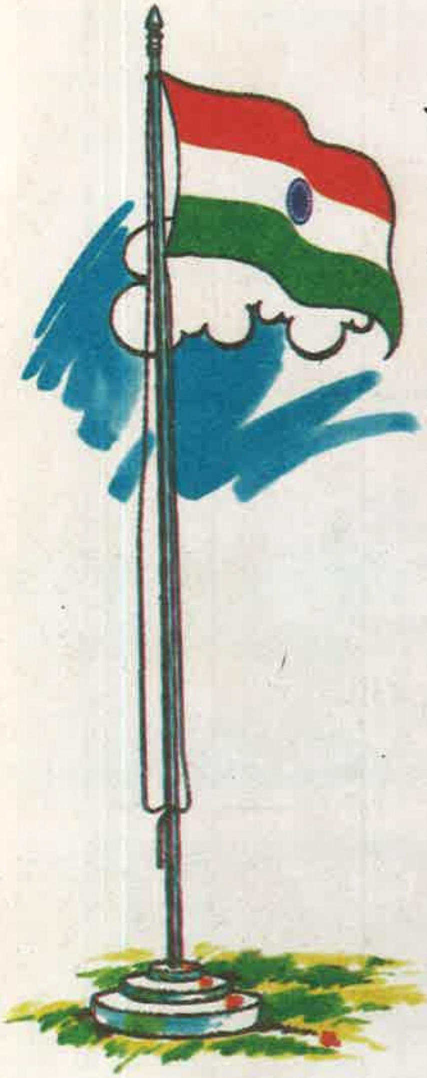

राष्ट्र-गान

जन-गण-मन-अधिनायक जय हे,
भारत - भाग्य - विधाता।
पंजाब सिंध गुजरात मराठा,
द्राविड़ - उत्कल - बंग।
विंध्य - हिमाचल - यमुना-गंगा,
उच्छल - जलधि - तरंग।
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशिष मागे
गाहे तव जय गाथा।
जन-गण-मंगलदायक जय हे,
भारत - भाग्य - विधाता।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय जय हे।

बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लि०, बुद्ध मार्ग, पटना-1
BIHAR STATE TEXTBOOK PUBLISHING COPORATION LTD., BUDH MARG, PATNA-1

मुद्रक : श्री ज्ञान ऑफसेट, इलाहीबाग, बैरिया, पटना